संवाद

बालमन अनेक तरह की संवेदनाओं से पूरित होता है। उनके सोचने-विचारने का तरीका और तर्क अपना ही होता है। लेकिन कई बार हम उन्हें 'छोटा' या 'बालक' समझकर ही व्यवहार करते हैं। अत: ज़रूरी है कि स्वयं को उनसे बड़ा बताने के बजाए उनसे मित्रता की जाए। अपनी सूझ-बूझ से उनके बालमन को गहराई के साथ समझा जाए।

बच्चों में प्रतिभा एवं महत्वाकांक्षाओं की कमी नहीं है। ज़रूरत है शिक्षकों द्वारा उन्हें प्रेरित कर आगे बढ़ाने की और मौका देने की। समय-समय पर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं जिसके अंतर्गत शोध, सीखने-सिखाने की सामग्री का निर्माण एवं जनसंचार सम्मिलित हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों द्वारा भी कई नवाचार किए जा रहे हैं। चुनौती इस बात की है कि सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

इसी दिशा में वर्तमान में प्रकाश जावड़ेकर, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तक *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल* का विमोचन किया गया, जो बच्चों को आवश्यकता अनुरूप सीखने के अवसर प्रदान कर कक्षा में बच्चों के सीखने की प्रगति को सुनिश्चत रखने में सहायक होगी। ये संकेतक कक्षा 1 से कक्षा 8 तक विषयवार दिए गए हैं जो बच्चों के सीखने के अपेक्षित स्तरों का निर्धारण करते हैं साथ ही शिक्षकों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के बारे में भी दिशा दिखाते हैं।

प्रस्तुत अंक में 'विशेष' के अंतर्गत प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा हेतु सीखने के प्रतिफल, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सहित दिया जा रहा है जिन्हें पढ़कर आप प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा को सीखने के संकेतक जान सकते हैं और उनकी संप्राप्ति भी कर सकते हैं।

अकादमिक संपादक